श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

''भारतीय वांड्मय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की संकल्पना'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्‌घाटन समारोह

दिनांक 28 फरवरी, 2020 **समय प्रातः 11.15 बजे**

स्थान – केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

केशव विद्यापीठ समिति के अध्यक्ष प्रो. जे. पी. सिंघल जी, महाविद्यालय प्रबधं समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा जी, महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा जी, संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. मीनू अग्रवाल जी, केशव विद्यापीठ समिति एवं महाविद्यालय प्रबंध समिति के समस्त पदाधिकारीगण, संगोष्ठी में पधारे हुए देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्षगण, प्रोफेसरगण, प्राचार्यगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

केशव विद्यापीठ द्वारा संचालित श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय द्वारा ''भारतीय वांड्मय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की संकल्पना'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं इस पुनीत कार्य के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ।

हमारा भारत विश्वगुरू के पद पर आसीन रहा है। इस सत्य से हम सभी परिचित हैं। हजारों वर्ष पहले से ही हमारे ऋषि–मुनि विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की खोज में रत थे।

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में संसार को ऋषि–मुनियों की अनेक महत्त्वपूर्ण देन हैं, जिनके लिए पूरा विश्व और समाज आज भी उनका ऋणी है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की ज्ञान धाराएं भारत से ही प्रवाहित होकर विश्व में बह रही हैं। संसार की पहली पुस्तक ऋग्वेद मानी गई है और इसके पश्चात यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का प्रणयन हुआ था। वेदों को ईश्वर की वाणी के समतुल्य समझा जाता है। भगवान ब्रह्मा को इनका रचयिता माना जाता है। इनमें विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित ज्ञान का अथाह भण्डार है।

हमारे भारत देश का वांड्मय अत्यन्त विपुल एवं विवधता सम्पन्न है। इसमें धर्म, दर्शन, भाषा व्याकरण आदि के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, रसायन, धातुकर्म, सैन्य, विज्ञान आदि भी विषय रहे हैं।

ज्योतिष के प्राचीन आचार्यों में आर्यभट्ट का नाम भारत में ही नहीं वरन् विश्व के ज्योतिषचार्यों में वे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

पाँचवीं शताब्दी में ही उन्होंने नक्षत्रों की वैज्ञानिक खोज कर डाली थी। ग्रहण की भविष्यवाणी करने की पद्धति का ज्ञान संसार को सर्वप्रथम उन्होंने ही दिया था। आचार्य ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर, भास्कराचार्य भी श्रेष्ठ ज्योतिषाचार्य थे। आज भी पंचांगों में चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, चन्द्रोदय, सूर्योदय, शुक्रग्रह के अस्त और उदय, बुध व बृहस्पति नक्षत्रों के उदय और अस्त का जो समय भारतीय गणित ज्योतिष के आधार पर लिख दिया जाता है, वह पूर्णतः सत्य होता है। आर्यभट्ट का ''सूर्य सिद्धान्त'' एवं ''सिद्धान्त शिरोमणि'' ज्योतिष के श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं।

यह सर्वविदित है कि शून्य एवं दशमलव की खोज भारत में ही हुई है। यह भारत के द्वारा विश्व को दी गई अनमोल देन है। गणित के मुख्यतः तीन भाग हैं – अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित। वैदिक काल में अंकगणित अपने विकसित स्वरूप में स्थापित थी। यजुर्वेद में एक से लेकर 10 खरब तक की संख्याओं का उल्लेख है।

बीजगणित के विकास का श्रेय आर्यभट्ट को जाता है। रेखागणित का आविष्कार भी वैदिककाल में हो गया था। यज्ञशालाओं, वेदिकाओं, कुण्ड आदि के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनका निर्माण रेखागणित के सिद्धान्त पर किया गया था।

वैदिक काल तक अनेक खनिजों की खोज हो चुकी थी और उनका व्यावहारिक प्रयोग भी होने लगा था। इस क्षेत्र में सबसे ज्यादा कार्य नागार्जुन नामक बौद्ध विद्वान ने किया था।

रसायनशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसरत्नाकर' है, जिसके रचयिता नागार्जुन है। रसहृदयतंत्र, रसार्णव, रससार आदि ग्रन्थ भी रसायनशास्त्र के प्रसिद्ध भारतीय ग्रन्थ हैं।

प्राचीन काल में शासन व्यवस्था धर्म आधारित थी। प्रमुख धर्म मर्मज्ञों वैश्वानस, अत्रि, उशना, कण्व, कश्यप, गार्ग्य, च्यवन, बृहस्पति, भारद्वाज आदि ने धर्म के विभिन्न सिद्धान्तों एवं रूपों की विवेचना की।

मनुस्मृति, याज्ञवलक्य स्मृति, पाराशर स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति में लोकजीवन के सभी पक्षों की धार्मिक दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है तथा नियम भी प्रतिपादित किये गये हैं।

अर्थशास्त्र का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ है कौटिल्य का अर्थशास्त्र। इसमें धर्म, अर्थ, राजनीति, दण्डनीति आदि का विस्तृत उपदेश है। इसके अलावा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं कामन्दकीय नीतिसार, नीतिवाक्यामृत, लघुअर्थनीति इत्यादि।

कौटिल्य ने अनेक प्रकार के यंत्रों का वर्णन किया है, जो युद्ध में उपयोगी थे। चक्र यंत्र, स्थिति यंत्र आदि का वर्णन यह सिद्ध करता है कि यंत्र विज्ञान विकसित था। विमान विज्ञान के अन्तर्गत पुष्पक विमान के नाम से सभी परिचित हैं। 'समराङ्.गण सूत्र' नाम ग्रन्थ में विमान रचना की विधि का वर्णन है। भारद्वाज रचित 'यंत्र सर्वस्व' में भी विमान रचना का विवेचन है।

वैदिक साहित्य में मनुष्य की 360 अस्थियों का वर्णन है। संस्कृत साहित्य में कीटों का वर्गीकरण ध्वनि, शरीर की बनावट, लिंगभेद, विष के प्रभाव, पक्ष, पाद,मुख, बाल आदि के आधार पर हुआ है। सुश्रुत के अनुसार मक्खियाँ व चींटियाँ छः छः प्रकार के होते हैं। इसी प्रकार अन्य प्राणियों का अध्ययन किया गया है।

वनस्पति विज्ञान के अध्ययन की परम्परा ऋग्वेद के समय से चली आ रही है। आयुर्वेद की दृष्टि से वनस्पतियों का अध्ययन किया जाता था। संस्कृत साहित्य में वृक्ष को मानव के समान सजीव बताया है।

शल्य क्रिया में सुश्रुत की आज भी सराहना की जाती है। महर्षि आत्रेय आयुर्वेद के ज्ञाता थे। उन्होंने 'आत्रेय संहिता' की रचना की थी। आत्रेय के शिष्यों ने दो ग्रन्थों की रचना की। एक में काय चिकित्सा का वर्णन है जिसे आज 'चरक संहिता' नाम से जाना जाता है।

दूसरे ग्रन्थ में 'शल्य चिकित्सा का वर्णन है। जिसे 'सुश्रुत संहिता' के नाम से जाना जात है। भारतीय चिकित्सा पद्धति में धन्वन्तरि को देवस्वरूप माना जाता है। उन्हीं के उपदेशों से 'सुश्रुत संहिता' की रचना हुई थी। सुश्रुत कृत 'सुश्रुत संहिता' में शल्य चिकित्सा के सवा नौ सौ औजारों का वर्णन है।

व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतंजलि का महाभाष्य श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। पाणिनि भारत के ही नहीं संसार के सर्वोत्कृष्ट व्याकरणाचार्य हुए हैं।

विधि विज्ञान का उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। तत्पश्चात् गौतम धर्मसूत्र, बौधायान धर्म सूत्र, वशिष्ठ धर्मसूत्र आदि में विधि विज्ञान का विवेचन है। इस क्षेत्र में श्रीमद्भगद्गीता का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सम्पूर्ण महाभारत आचार शास्त्र के सिद्धान्तों से भरा पड़ा है।

इन क्षेत्रों के अतिरिक्त भी अन्य विभिन्न क्षेत्रों यथा– संगीत, साहित्य, प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल एवं खगोल, न्याय एवं तर्कशास्त्र, दर्शन, सामाजिक विज्ञान आदि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा की गई थी।

भारत को विश्वगुरू की पदवी प्राप्त होने के अन्य भी कई आधार हैं, यथा–

1. जब साइंस का नाम भी नहीं था तब भारत में नवग्रहों की पूजा होती थी।
2. जब पश्चिम के लोग कपड़े पहनना नहीं जानते थे, तब भारत रेशम के कपड़ों का व्यापार करता था।
3. जब कहीं कोई भ्रमण करने के कोई साधन स्कूटर, मोटर साईकिल, जहाज आदि नहीं थे तब भारत के पास बड़े–बड़े वायु विमान हुआ करते थे।
4. जब डॉक्टर्स नहीं थे तब सहज में स्वस्थ होने की बहुत सी औषधियों का ज्ञाता था भारत।
5. सौर ऊर्जा की शक्ति का ज्ञाता था।
6. चरक और धनवंतरी जैसे आयुर्वेद के महान आचार्य थे भारत देश में।

7. जब अन्य देशें के पास हथियार के नाम पर लकड़ी के टुकड़े हुआ करते थे, उस समय भारत देश में आग्नेयास्त्र, प्राक्षेपास्त्र, वायव्यास्त्र तथा बड़े–बड़े परमाणु हथियारों का ज्ञाता था भारत।
8. हमारे इतिहास पर रिसर्च करके ही अल्बर्ट आईंस्टाईन ने अणु, परमाणु पर खोज की है।
9. हमारे इतिहास पर रिसर्च करके ही नासा अंतरिक्ष में ग्रहों की खोज कर रहा है।
10. हमारे इतिहास पर रिसर्च करके एशिया और अमेरिका बड़े–बड़े हथियार बना रहा है।
11. हमारे इतिहास पर रिसर्च करके रूस, ब्रिटेन, अमेरिका, थाइलैण्ड, इण्डोनेशिया आदि देश बचपन से ही स्कूलों में संस्कृत सिखा रहे हैं।

12. हमारे इतिहास पर रिसर्च करके वहाँ के डॉक्टर्स बिना इंजेक्शन, बिना दवाइयों के केवल ओमकार का जाप करने से लोगों के हार्ट अटैक, बीपी, पेट, सिर, छाती की बड़ी–बड़ी बीमारियाँ ठीक कर रहे हैं। ओमकार थैरेपी का नाम देकर बड़े–बड़े हॉस्पिटल खोल रहे हैं।

13. योग की शुरूआत भारत में ही हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों द्वारा की गई थी। आज पूरी दुनिया जानती है कि योग के कितने फायदे हैंइसलिए 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है। आज के दौर में विभिन्न मानसिक और शारीरिक समस्याओं से निजात पाने के लिए मेडीटेशन एक अहम रास्ता है।

भारत के पास ज्ञान का असीम समुद्र है, जिसमें गोते (अनुसंधान) लगाकर अनमोल रत्नों (आविष्कारों) को प्राप्त किया जा सकता है जिनके आधार पर भारत विश्व का नेतृत्व कर सकता है। भारत को भारतीयता के आधार पर ही पुनः विश्वगुरू के पद पर स्थापित किया जा सकता है।

कोई भी देश या समाज तभी अपना सर्वांगीण विकास जिसमें आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक आदि तब कर सकता है जब वहां के शिक्षक गुरु होने के सामर्थ्य से युक्त हों। वे केवल धनोपार्जन के लिए नहीं अपितु देशोत्थान, समाजोत्थान एवं मानवोत्थान हेतु कार्य करें। भारतीय साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति के आधार वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम'', ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' एवं देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत हों। जो विद्यार्थियों में देश और संस्कृति के प्रति प्रेम जागृत कर सकें अैर उन्हें मूल्याधारित संस्कारक्षम शिक्षा दे सकें।

इसके लिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय वांड्मयमें निहित ज्ञान का समावेश किया जाना आवश्यक है। जिससे देश के भावी शिक्षकों में देश के प्रति गौरव, प्रेम और समर्पण का भाव जग सके।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप भारतीय वांड्मयका अध्ययन अवश्य करें। इससे निश्चित रूप से हमें हमारे लक्ष्य प्राप्त होंगे। केशव विद्यापीठ समिति द्वारा संचालित महाविद्यालय इस तरह के विषयों को लेकर इतना सुन्दर आयोजन करके भविष्य के शिक्षकों के मानस में जिस तरह से भारतीय संस्कृति की जड़ें जमाने का कार्य कर रहा है। निःसन्देह साधुवाद का पात्र है।

यह समिति दिन–प्रतिदिन उन्नत होकर भारतीय समाज के पटल पर दिव्य ज्ञान से आपूरित शिक्षकों को प्रदान करेगी और भारतीय समाज उनसे आलोकित होता रहेगा। ऐसी आशा और कामना करता हूँ।

धन्यवाद। जयहिन्द।